मौलाना अबुल कलाम आजाद दिवस के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–29.11.2016, समय–पूर्वा॰ 11.30 बजे, स्थान–मौलाना आजाद कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी, नेऊरा, पटना)

मौलाना अबुल कलाम आजाद जयंती के अवसर पर आयोजित आज के कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ॰ ए॰ए॰ हई जी, उपाध्यक्ष एस॰एस॰ मसहदी जी, सचिव श्री सफदर अली खान जी, संयुक्त सचिव श्री एहसान अहमद जी, मिल्लत एडुकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष, श्री एम॰ रहमान जी, महाविद्यालय के शिक्षक एवं छात्रगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

आज हम सभी देश के प्रथम शिक्षा मंत्री तथा महान स्वतंत्रता–सेनानी मौलाना अबुल कलाम आजाद जी की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शरीक हुए हैं। यों तो, मौलाना साहब की जयंती विगत् 11 नवम्बर को ही पड़ती है, किन्तु महाविद्यालय–परिवार ने आज यह कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया है। सही मायने में महापुरूषों के जीवन और उनके कृतित्व के स्मरण की कोई तारीख नहीं होती। जो इतिहास की विभिन्न तारीखों में अपने महान कीर्तियों की बदौलत, अपनी अमिट छाप छोड़ गये होते हैं और जिनके जीवन का हरेक लम्हा महत्वपूर्ण होता है, उनके जीवन–दर्शन को लेकर हम किसी भी दिन उत्सव आयोजित कर सकते हैं। अतः मौलाना साहब की जयन्ती– कार्यक्रम के आयोजन हेतु मैं आयोजकों को धन्यवाद देता हूँ।

मौलाना अबुल कलाम आजाद भारतीय इतिहास की एक ऐसी शख्सियत हैं, जिनके त्याग और साहस के अद्भुत कारनामों से भारतीय इतिहास के पन्ने रंगे पड़े हैं। एक अद्वितीय इस्लामी विद्वान, महान बुद्धिजीवी, सिद्धांतपरक राजनीति के प्रबल पक्षधर और आजाद हिन्दुस्तान के पहले शिक्षा मंत्री के रूप में की गई मौलाना आजाद साहब की देश–सेवा अविस्मरणीय है।

स्वतंत्रता–सेनानी के रूप में उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत की अनेक प्रताड़नाएँ झेलीं। अहमदनगर फोर्ट तथा राँची में बरसों तक नजरबंद और कैद रहे। फिर भी अनेक यंत्रणाओं के बावजूद, स्वतंत्रता के आंदोलन का यह निर्भय सेनानी अपने कर्त्तव्य–पथ से बिल्कुल नहीं डिगा।

मौलाना साहब आजादी की लड़ाई में शरीक होने के साथ–साथ, उर्दू अदब के भी एक महान लेखक थे। अहमदनगर कारावास में रहते हुए उन्होंने जो पत्र लिखे थे, उनका संग्रह– ''गुबारे खातिर'' के नाम से प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक के माध्यम से भारत के स्वतंत्रता–आंदोलन के इतिहास की सही तस्वीर देखी जा सकती है। इस पुस्तक में संग्रहित पत्रों की भाषा–शैली इतनी दिलकश और जबरदस्त है कि आज भी यह हमारी भावनाओं और विचारों को आंदोलित करती है। मौलाना साहब ने 'कुरान–शरीफ' का भी जो अनुवाद किया है, वह पूरे विश्व में चर्चित है। उनकी लिखी पुस्तक– 'इंडिया विन्स फ्रीडम' –वस्तुतः भारतीय स्वतंत्रता–आंदोलन का एक जीवंत दस्तावेज है। उनकी इस पुस्तक से आजादी की लड़ाई तथा देश–विभाजन के तत्कालीन कारणों का पता चलता है। यह पुस्तक उनकी बेबाक लेखन–शैली और नैतिक साहस का परिचायक है।

मौलाना साहब हिन्दुस्तान की एकता के प्रबल समर्थक थे। वे देश–विभाजन के पक्ष में नहीं थे। राष्ट्रीय–एकता और भारत की धार्मिक–सदाशयता के प्रति मौलाना साहब की आस्था अत्यंत प्रगाढ़ थी। कौमी एकजेहती और सामाजिक–समरसता– इन दोनों के लिए वे आजीवन संघर्षरत रहे।

आजाद भारत के पहले शिक्षा मंत्री के रूप में उन्होंने आधुनिक भारत की शिक्षा–व्यवस्था का प्रारूप तैयार किया। उन्होंने भारत के लिए ऐसी शिक्षा–व्यवस्था का सपना देखा था, जो मनुष्य को ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में मजबूती प्रदान करने के साथ–साथ, नैतिकता और मानवता के धरातल पर भी श्रेष्ठ मनुष्य को तैयार करती हो। उन्होंने विभिन्न तरह की तकनीकी और प्रबंधन से जुड़ी संस्थाएँ स्थापित कराईं, जो आधुनिक भारत के समग्र विकास का मार्ग–प्रशस्त करने में कामयाब रहीं। आई॰आई॰एम॰, सी॰एस॰आई॰आर॰ एवं आई॰ए॰आर॰आई॰ जैसी अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संस्थाएँ, मौलाना साहब की आधुनिक भारत को अनुपम देन हैं।

आज हमारा देश एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जिस वक्त हमें आतंकवाद और भ्रष्टाचार के विरूद्ध अपनी लड़ाई को और अधिक धारदार बनाना है। हमारा देश विभिन्न धर्मों, जातियों और परम्पराओं का एक खूबसूरत बाग है, जहाँ किस्म–किस्म के फूलों की रंगीनी और खूशबू मिलकर, इस मुल्क की एक मुकम्मल तस्वीर बनाती है। हमारे देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति और महान दार्शनिक डॉ॰ राधाकृष्णन ने एक जगह लिखा है कि– ''भारत की राष्ट्रीय एकता, चींटियों द्वारा एकत्रित अन्न–कणों के समान नहीं है, बल्कि यह उस मधु के समान है, जिसमें हर प्रकार के फूलों का रस मिलकर एकरस हो गया है।''

मित्रों, आज हमें मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे निर्भीक और महान देशभक्त नेता की बहुत याद आती है। आज देश में जब राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सदभावना को और अधिक सुदृढ़ करने की जरूरत महसूस की जा रही है, तो मौलाना साहब का व्यक्तित्व और कृतित्व हमें अत्यन्त प्रेरणादायी प्रतीत होता है।

मौलाना साहब के नाम पर स्थापित इस तकनीकी शैक्षणिक संस्थान के बारे में मुझे बताया गया है कि यहाँ से शिक्षा प्राप्त कई पूर्ववर्ती छात्र देश में आज विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। आज इस शिक्षण–संस्थान में अध्ययनरत छात्रों को मौलाना आजाद से प्रेरणा लेनी चाहिए।

मैं आज आयोजित कार्यक्रम के माध्यम से मौलाना अबुल कलाम आजाद के कृतित्व को नमन करता हूँ। मैं आपकी शिक्षण–संस्था की समग्र प्रगति की शुभकामना करता हूँ। मैं संस्था के सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों को आगामी नये वर्ष के लिए अपनी हार्दिक मंगल कामनाएँ एवं बधाई भी देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।